बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
सप्तम पत्र - भाषा विज्ञान

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
बी॰ के॰ कालेज
डुमरॉव बक्सर

वाचिक भाषा का स्वरूप

आंगिक भाषा से आगे बढ़कर वाचिक भाषा तक पहुँचना मानव-इतिहास की क्रान्तिकारी उपलब्धि थी। जहाँ आंगिक भाषा इने-गिने स्थूल-इंगितों तक ही सीमित थी, वहाँ वाचिक भाषा - भाव और विचार के सम्प्रेषण की असीम सम्भावनाओं से सम्पन्न थी। मनुष्य की वृत्तियाँ केवल खाने-पीने तक सीमित नहीं रहीं, वह भाषा की सहायता से सूक्ष्म से सूक्ष्म और गूढ़ से-गूढ़ बातें दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ हो गया, उसके चिन्तन और विचार की परिधि इतनी विस्तृत हो गयी कि उसमें भूगोल, खगोल सब अँट गये।

वाचिक भाषा उपर्युक्त तीनों सीमाओं से मुक्त थी जो आंगिक भाषा में विद्यमान थीं। वाचिक भाषा का प्रयोग सूक्ष्म से सूक्ष्म बौद्धिक अभिव्यञ्जना के लिए हो सकता था। उससे सूची - भेद्य अन्धकार में भी काम लिया जा सकता था और अभिप्राय पूरी स्पष्टता से व्यक्त किया जा सकता था। उसके लिए प्रकाश की बिल्कुल आवश्यकता नहीं थी। तीसरी चीज़ यह कि साम्मुख्य भी अनिवार्य नहीं था। कोई किसी की ओर देखे या न देखे, बातें उसकी सुन सकता था।

इस प्रकार आंगिक भाषा की तुलना में वाचिक भाषा निश्चय ही बहुत बड़ी उपलब्धि थी, पर मनुष्य उसी से सन्तुष्ट नहीं रहा।

सभी दिशाओं में मनुष्य की प्रगति का एक ही मूल आधार है और वह है उसकी जिज्ञासा, जिसे दूसरे शब्दों में असन्तुष्टि कह सकते हैं। वह अपनी स्थिति से कभी सन्तुष्ट नहीं होता, सदा आगे बढ़ना चाहता है, सदा ऊँचे चढ़ना चाहता है और जितनी दूरी तय कर लेता है, उससे आगे की दूरी को अपना लक्ष्य बनाना आरम्भ कर देता है।

वाचिक भाषा की त्रुटियाँ उसे खलती रहीं। एक तो उसका अस्थायित्व, और दूसरे, देश-काल से आबद्ध होना। वाचिक भाषा उच्चारण के समय ही अपना काम करती है; जैसे- जैसे ध्वनि का उच्चारण होता जाता है वैसे-वैसे वह नष्ट होती जाती है। इसलिए घंटे-भर पहले की भाषा से घंटे-भर बाद या आज की उच्चरित भाषा से कल काम नहीं लिया जा सकता।

मनुष्य में स्थायित्व प्राप्त करने की अदम्य लालसा होती है। दीर्घ जीवन की कामना उसी का प्रतिरूप है। दीर्घ जीवन की कामना केवल शारीरिक दृष्टि से ही उसे अभिप्रेत नहीं, वह अपनी प्रत्येक उपलब्धि में दीर्घजीवी बनना चाहता रहा है। किसी दूरस्थ प्रियजन तक अपनी बात पहुँचाना वाचिक भाषा के के लिए सम्भव न था और न आगे की पीढ़ी के लिए अपनी बात सुरक्षित रख पाना। मनुष्य की सतत अन्वेषणपटु बुद्धि ने इस त्रुटि को दूर करने के लिए लिपि का आविष्कार किया जिससे वाचिक भाषा को लिखित रूप दिया जा सके।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज
डुमराँव बक्सर